संस्कृत भाषा और विभिन्न लौकिक विद्याएँ (Sanskrit Language and Various Secular Sciences)

(एकदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद)

(प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा अभियान (PM-UShA) एवं श्री रामजी रवजी लालन कॉलेज, भुज (कच्छ) के संयुक्त तत्वाधान में कॉलेज के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित परिसंवाद में प्रस्तुत किए गए संशोधन पत्रों का समूह)

संपादक

डॉ.मेहुल बी.शाह

सह-संपादक

डॉ. अत्रिकुमार एन. राजगोर

प्रा. मेहुल एन. पुरोहित

श्रीमती माधवी पी. धोलकिया

प्रकाशक

वेद प्रकाशन हाउस- भुज

7621870709

ग्रंथ का शीर्षक: संस्कृत भाषा और विभिन्न लौकिक विद्याएँ
(एकदिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद के शोध-पत्रों का संकलन)

संपादक:
डॉ. मेहुल शाह
सह-संपादक
डॉ. अत्रिकुमार एन. राजगोर
प्रा. मेहुल एन. पुरोहित
श्रीमती माधवी पी. धोलकिया

आयोजक:

संस्कृत विभाग

श्री रामजी रंजी लाल लालन कॉलेज

भुज (कच्छ) - गुजरात

प्रकाशक:

वेद प्रकाशन हाउस- भुज
7621870709
भुज (कच्छ) - गुजरात

प्रकाशन वर्ष: 2026
ISBN-978-93-47801-50-1

इस ग्रंथ के समस्त अधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग आदि) पुनः प्रकाशित, पुनरुत्पादित या संग्रहीत नहीं किया जा सकता।

अस्वीकरण (Disclaimer):

इस ग्रंथ में प्रकाशित शोध-पत्रों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के स्वयं के हैं। संपादक, आयोजक संस्था अथवा प्रकाशक इन विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे।

प्रकाशक:
वेद प्रकाशन हाउस- भुज
7621870709भुज (कच्छ) - गुजरात

अनुक्रमणिका

क्रमांक	शीर्षक	लेखक/सह-लेखक	पृष्ठ संख्या
1	“તિમિરપંથી અને કૌટિલ્યનું અર્થશાસ્ત્ર: ચૌરવિદ્યાનું શાસ્ત્રીય અને લૌકિક પરિપ્રેક્ષ્ય — એક તુલનાત્મક વિશ્લેષણ"	ડો. ભાવેશ વિનોદરાય ભટ્ટ	1
2	*Proto-Statistical Concepts in Sanskrit Literature: An Interdisciplinary Reassessment”*	Dr. Milan M. Pandya	4
3	Explores the connection to the hidden history of centuries with the Rogan Painting	Asmita Soni	15
4	“नाकरस्य ध्रुवाख्याने भागवतपुराणस्य प्रभावः”	खांडेका धवल अमरशीभाई	20
5	बहुव्रीहौ कप्प्रत्ययविधानविचारः	शिवमकुमारः जोषी	25
6	ગોડરત્નાકરમાં રસવિભાજન	ડો. દિપાલી પ્રભુલાલ ચાવડા	31
7	*Research Paper: The Surgical Legacy of Sushruta Samhita*	Angel Sanjeev Sharma	44
8	સંસ્કૃત અને યોગવિદ્યા	ડો.ભરતકુમાર એચ.મોઢપટેલ	48
9	Fiscal Administration in Kautilya’s Arthashastra and Shukraniti	Dr. Radheshyam R. Chhanga	54
10	શ્રીમદ્ ભાગવત મહાપુરાણની ‘પ્રહલાદ સ્તુતિ’ માં ભક્તિનું સ્વરૂપ: એક સંશોધન	હીત રાજગોર,અત્રિભાઈ રાજગોર, શ્રી મેહુલભાઈ પુરોહિત, શાસ્ત્રી શ્રી અશ્વિનભાઈ વ્યાસ	57
11	ईशावास्य विद्या	ડૉ.કીર્તિદા બંસીલાલ વ્યાસ	63
12	Principles of Natural Justice: From Sanskrit Sources to Modern Law	Dr.Avani Fatabhai Aal	71
13	લૌકિક વિદ્યાઓના મૂળ સ્ત્રોત રૂપે સંસ્કૃત ભાષા	Desai Mittalben Kanjibhai	76
14	Sanskrit Language and Musicology	Maurya shah	86
15	સંસ્કૃત વાઙ્મયમાં ગુપ્તચર વિદ્યા : સ્પશ થી સ્પાય સુધી	નિસર્ગ આનંદ મહેતા, શ્રી હરેશભાઈ દયાશંકર મહેતા	89

16	મહા કવિ કાલિદાસ રચિત' અભિજ્ઞાનશાકુન્તલમ' નાટકમાં પ્રગટ થયેલ નારીચિત્રણ એક સમાજશાસ્ત્રી અભ્યાસ	નોડે શહેનાજ બાનુ જુમ્મા	97
17	Concept of Mind and Self in Bhagavad Gita: An Indian Psychological Perspective	Parmar Dhyanika Kalpeshbhai	103
18	"हृदय रोग पर योग की असर"	अंकिता महेश्वरी	107
19	કાલિદાસનાં કાવ્યોમાં શિક્ષણ અને શિક્ષક વિષયક આદર્શ	Nayan D. Jethava	115
20	Chemistry and Sanskrit: An Interdisciplinary Review of Scientific Thought in Ancient Indian Texts	Aaishabai O. Kumbhar	131
21	Chemical Knowledge Systems in Sanskrit Literature: An Interdisciplinary Scientific Investigation	Imaran Khorani[1], Nayan Bhuva[2]	137
22	पाणिनीयहरिनामामृतव्याकरणयो: अध्यात्मविद्याया: दर्शनम्	हार्दिक गिरीशभाई ओझा	143
23	पारस्करगृह्यसूत्रे विवाहसंस्कारः - एकं लौकिकसामाजिकम् अध्ययनम्	Joshi Kishan Kamleshbhai,Dr. Atrikumar Navalshankar Rajgor	149
24	हिंदी उपन्यास में सांस्कृतिक नीति मूल्यों का अध:पतन - एक अध्ययन (गीलीगड्डु, दौड़ और समय सरगम के संदर्भ में)	जोशी आरती प्रवीणभाई	158
25	"અધ્યાત્મ: માનવ જીવનનો આધાર "	झाला नेहलबा के.	163
26	આયુ નો પરિચય અને વ્યાખ્યા;	ચાકી સાનિયા ઉમરભાઈ,જોષી બંસી ધર્મેન્દ્રભાઈ	169
27	"કચ્છી સાહિત્યમાં સંત મેકરણનું યોગદાન"	ડૉ. રમેશ નારણ વરચંદ	174
28	ગરુડપુરાણનાં મુકતકોમાં દાન Donations to the Muktaks of the Garudapurana	દૃષ્ટિ કાન્તિલાલ વાઘજીયાણિ, ડો.અત્રિકુમાર નવલશંકર રાજગોર	178
29	વૈદિક શિક્ષણ પદ્ધતિ: ગુરુકુળ પરંપરા અને આધુનિક શિક્ષણ નીતિ (NEP 2020) વચ્ચેનો સેતુ	ફોરમ બી. ભટ્ટ	186
30	બ્રહ્મપુરાણમાં નર્મદા	મોહિની જોશી	191

31	ભારતીય જ્ઞાન પ્રણાલી	ગરવા ડોલી	198
32	‘યોગવિદ્યા અંતર્ગત અષ્ટાંગયોગના યમની માનવ સ્વાસ્થ્ય પર અસર’	સિકંદર સાટી	205
33	રઘુવંશના છઠ્ઠા સર્ગમાં કાવ્યશાસ્ત્રીય તત્વો અને કારક વૈવિધ્યનો સમન્વયાત્મક અભ્યાસ	તેરૈયા જિતેન્દ્ર જેશંકરભાઈ,ડૉ. જે.આર.તેરૈયા	212
34	ગુજરાતી લોકવ્રતકથા: સંસ્કૃત વ્રતકથાઓનું લૌકિકીકરણ	કૌશિકકુમાર એલ. પંડ્યા	218
35	આર્ષ પરંપરામાં આશ્રમ વ્યવસ્થા : રામાયણના સંદર્ભમાં	મહેશ્વરી હંસાબેન કે., ડૉ. મેહુલ બી. શાહ	228
36	ભગવદગીતાનું મનોવૈજ્ઞાનિક વિશ્લેષણ	સોમૈયા જ્હાનવી હિતેશભાઈ	245
37	સંસ્કૃત અને વિજ્ઞાન	મિહિર એમ વોરા, અર્ણવ અંજારિયા	251
38	“સંસ્કૃત અને યોગવિદ્યા”	ચેતના રબારી	254
39	સંસ્કૃત રાજનીતિ શાસ્ત્રોમાં વર્ણિત રાજધર્મ – રાજનીતિની વર્તમાનમાં પ્રસ્તુતતા	Dr. Manisha Lakhabhai Solanki	262
40	યોગ વિદ્યા	નેહા અમિતભાઈ જેઠી	268
41	સંસ્કૃત સાહિત્યમાં કૃષિ	હિરલ દિપકભાઈ વોરા	281
42	પંચમહાભૂત : પર્યાવરણ સંતુલનનો પાયો	મયૂરી પ્રકાશભાઈ વ્યાસ	290
43	યુવાપેઢીની પથદર્શક - श्रीमद्भगवद्गीता	સુચિતા ધર્મેન્દ્રભાઈ ઠક્કર	298

उद्घोष

राष्ट्रिय शिक्षा नीति २०२० भारत के लिए शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ा बदलाव लाने के लिए उद्युक्त है । वर्तमान शिक्षा में भारत की और देखने की जो दृष्टि है उसे बदलना बड़ी चुनौती है । अंग्रेजों की असर वाली शिक्षा पद्धति के कारण हमारी दृष्टि सदैव यूरोप और अमेरिका की और देखती रहती है, जैसे हमारे यहाँ ज्ञान का अकाल हो ! किन्तु वास्तविकता यह है कि, भारत परापूर्व काल से ज्ञान के क्षेत्र में अग्रसर रहा है । परंतु जैसे रसोई बनाने वाले को अपनी रसोई अच्छी नहीं लगती वैसे ही हम को अपने यहाँ विकसित हुआ ज्ञान दिखता ही नहीं, यह बड़ी समस्या है ।

इस समस्या से निकलना सरल नहीं है । किन्तु यदि एक बार भारत की और विधायक दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति बन जाये तो भारत के स्वर्णिम भूतकाल में इतना कुछ भरा पड़ा है जिस से हमारा सर गर्व से ऊँचा हो जाये । अभी प्रश्न यह है, कि ऐसा कैसे हो । यह होगा सतत प्रयत्न से, संस्कृत को जानने से । भारत के भूतकाल के स्वर्ण समय को जानने का एकमात्र माध्यम संस्कृत भाषा है । संस्कृत भाषा में लिखे लाखों ग्रंथों के पृष्ठों पर यह स्वर्णिम गाथा लिखी हुई है ।

संस्कृत में जगत का उत्तम साहित्य निर्माण हुआ है । उस में रचित अद्भुत रचनाओं से मन विस्मित हो उठता है । विश्व का सब से बड़ा शब्दकोश बनाने जाएँ तो संस्कृत का ही बनेगा । सभी भाषाओं के व्याकरणों में संस्कृत का व्याकरण सब से परिपूर्ण व्याकरण माना जाता है । किन्तु इतना सब होते हुए भी संस्कृत केवल साहित्य की भाषा नहीं है । आज जैसे पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषा हरेक विद्या के लेखन की भाषा बन गई है वैसे ही पूर्व में संस्कृत ज्ञान विज्ञान के हरेक क्षेत्र में अभिव्यक्ति की भाषा थी उस में कोई संदेह नहीं है । संस्कृत भाषा में लिखे ग्रंथों में गणित, विज्ञान, सामाजिक शास्त्र, मानस शास्त्र, राजनीति शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, खगोल और भूगोल शास्त्र, समर शास्त्र आदि मनुष्य संसार के सारे शास्त्रों का समावेश हुआ है । विज्ञान में भी भौतिक विज्ञान, रसायण विज्ञान, जीव विज्ञान, धातु विज्ञान, परमाणु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भूविज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान, शिल्प और स्थापत्य विज्ञान, संगीत विज्ञान आदि न जाने कितने विज्ञानों का गहरा अध्ययन देखने को मिलता है । इन विज्ञानों के क्षेत्र में हुए संशोधनों की गवाही देते कितने ही स्मारक आज भी खड़े है । किन्तु उस की और देखने की फुरसद किस को है !

हमारा यह परिसंवाद इस दृष्टि से बहोत महत्त्वपूर्ण हो जाता है । क्यों कि, इस में हमने ज्ञान-विज्ञान के हरेक क्षेत्र को संस्कृत भाषा के साथ जोड़कर संशोधन के लिए आह्वान किया है । इस में केवल संस्कृत के शोधार्थी ही जुड़े ऐसी अपेक्षा नहीं रखी गई है, किन्तु सभी ज्ञान प्रवाह के लोग इस से जुड़कर अपने ज्ञानक्षेत्र में प्राचीन भारत में क्या स्थिति थी उसे देखने का प्रयास करे ऐसी अपेक्षा है । इस अपेक्षा में हम सफ़ल भी हुए है । भाषा, गणित, विज्ञान, मानसशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि अनेक ज्ञानशाखाओं के १५० से ज्यादा शोधार्थीओंने इस संगोष्ठि के लिए आवेदन किया है ।

इस संगोष्ठि के दो मुख्य वक्तव्यों के विषय **“संस्कृतस्य वैश्विक प्रभावः”** और **“ सर्वविद्याप्रकाशकम् संस्कृतम्”** रखे गए हैं, जो संस्कृत के अज्ञात प्रभाव को संगोष्ठि के माध्यम से उद्घाटित करेगा । परिसंवाद में प्रस्तुत होने वाले विषयों में भी आकर्षक विषय वैविध्य देखने को मिलता है । सब से बड़ी बात आवेदकों में दिखने वाले युवाओं की संख्या है ।

हमें आशा है, कि यह परिसंवाद में प्रस्तुत होने वाले विषयों के द्वारा समाज में इस विषय को देखने की दृष्टि बदलेगी और धीरे धीरे नयी पीढ़ी भारत की और देखने का अपना नजरिया बदलेगी । वह २०४७ के श्रेष्ठ भारत का उद्घोष होगा ।

-संपादक मंडल